## उपसंहार

`आधुनिकता` एक ऐसा शब्द हैं, कि जिसके संबंध में विविध मतभेद हो सकते हैं। `आधुनिकता` के अनेक अर्थ हैं। लेकिन अधिकतर वह शब्द `वर्तमान का` या `नये जमाने का` इसी अर्थ में प्रयुक्त होता हैं। जीवनदर्शन की एक प्रक्रिया होने के कारण आधुनिकता को किसी एक युग की उपलब्धि नहीं माना जा सकता। आधुनिकता का प्रस्तुतीकरण हर युग में अपने ढंग से ही होता हैं।

`आधुनिकता` के लिए ही `आधुनिकता बोध` या `आधुनिक बोध` शब्द का भी प्रयोग किया जाता हैं। वैसे प्रत्येक शब्दों में अंतर जरूर हैं। आजकल `आधुनिकीकरण` भी एक शब्द इसमें आ जुडा हैं। `आधुनिकीकरण` और `आधुनिक बोध` में भी घनिष्ठ संबंध हैं। विज्ञान के बढते प्रभाव के कारण तथा परंपरा, रूढी, नैतिक मूल्य तथा परिस्थिति बदलने के कारण आज के विचारों में हमें बदल दिखाई देता हैं। और यह परिवर्तन ही `आधुनिक युगबोध` कहलाता हैं।

मोहन राकेश के चारों नाटकों में यह आधुनिक युगबोध हमें दिखाई देता हैं। वैसे तो चारों नाटक उन्होंने आधुनिक दृष्टि से ही लिखे हैं। यद्यपि `आषाढ का एक दिन` तथा `लहरों के राजहंस` ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित नाटक हैं, तो भी उनमें आधुनिक बोध हैं।

`आषाढ का एक दिन` नाटक भावना का नाटक हैं, तो भी उसमें होनेवाली साहित्यकार की विवशता आज के साहित्यकार की भी विवशता हैं। कालिदास के मन में चलनेवाला अंतर्द्वन्द्व आज के आधुनिक मानव का अंतर्द्वन्द्व हैं। इतना ही नहीं, नाटक में होनेवाले कालिदास और मल्लिका के विवाह संबंधी विचार आज के नवयुवकों के विचार हैं। शिल्प की दृष्टि से भी यह नाटक नवीनता प्रदान करता हैं। पहली बार राकेश ने इस नाटक में भाषा और कार्य का एक

साथ प्रयोग किया हैं । संवादों की दृष्टि से भी यह नाटक नवीनता प्रस्तुत करता हैं ।

` लहरों के राजहंस ` नाटक उलझनों का नाटक हैं । आज का मनुष्य जीवन की दौडधूप में जिसतरह व्यस्त रहता हैं, और जो चाहता हैं, वह कर नहीं पाता, वैसा ही इस नाटक का ` नंद ` हैं । आज के मनुष्य की ही तरह नाटक का नंद द्विधा मन:स्थिति में दिखाई देता हैं । उसे पत्नी का आकर्षण हैं और भाई का भी । इसी अंतर्द्वन्द्व के कारण वह कोई भी निर्णय नहीं ले पाता । आधुनिक मनुष्य ऐसा ही हैं । वह द्विधा मन:स्थिति के कारण झट से निर्णय नहीं ले पाता । नाटक की नारी सुंदरी, आज की नारी के समान अहं ग्रस्त हैं ।

` आधे-अधूरे ` नाटक तो पूर्णत: आज की परिस्थिति पर ही आधारित हैं । इस नाटक की कथा तो आधुनिक हैं ही, साथ ही इस नाटक के पात्र भी आधुनिक हैं । नाटक में होनेवाली समस्या हम हररोज हमारे आसपास देखते हैं । आधुनिकीकरण के कारण नगर में रहनेवाले मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं का चित्रण इस नाटक में हैं । आज नारी की नौकरी एक समस्या बनी हैं, उसके कारण उत्पन्न समस्याएँ तथा पति-पत्नी का झगडा बच्चोंपर कितना बुरा प्रभाव डालता हैं, उसका इस नाटक में अच्छा चित्रण हैं । मूल्यविघटन के कारण उत्पन्न समस्यों का चित्रण भी इसी नाटक में दिखाई देता हैं ।

उनका ` पैर तले की जमीन ` नाटक अस्तित्ववादी हैं । मृत्यु को अचानक सामने देखनेपर व्यक्ति की स्थिति किस प्रकार हो जाती हैं इसका यह नाटक सुंदर चित्रण प्रस्तुत करता हैं । पति-पत्नी संबंध किस कारण बिगड जाता हैं, शक या संशय कितना विनाशकारी होता हैं, अमीर लोग गरीबों का शोषण किस तरह करते हैं, जीवन में किस तरह विविध मनोवृत्ति के तथा विचारों के लोग होते हैं, उसका चित्रण करनेवाला यह नाटक हैं । आज के लोग अपना दु:ख भूलने के लिए किस तरह शराब पीते हैं, ताश खेलते हैं, क्लबों में जाते हैं, इसका चित्रण इस नाटक में किया हैं ।

इन चारों नाटकों को देखनेपर एक महत्वपूर्ण बात सामने यह आती है, कि उनके चारों नाटकों में होनेवाले सभी पात्र कुण्ठा, घुटन, अंतर्द्वन्द्व, असंतोषा तथा विसंगतिबोध से परिपूर्ण हैं। सभी पात्र अपने को अकेला पाते हैं। चारों नाटकों के प्रमुख पुरुषा पात्र एक ही स्वभाव के हैं। किंबहुना हम यह कह सकते हैं, कि इन पात्रों में हम मोहन राकेश के व्यक्तित्व को ही देख सकते हैं। कालिदास, नंद, महेन्द्रनाथ तथा अमूल में होनेवाली घुटन, कुण्ठा, अंतर्द्वन्द्व स्वयं लेखक का ही हैं। नाटक के बाकी सभी पात्र भी असंतोषा तथा विसंगति बोध से पीडित हैं सभी अपने घर से बाहर से बाहर जाना चाहते हैं, लेकिन फिर से अपने घर वापस आते हैं। यह आधुनिक बोध ही हैं।

राकेश के चारों नाटकों की नायिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन राकेश ने अपनी नायिकाओं के साथ अन्याय किया हैं। उनकी तरफ देखनेका राकेश का दृष्टिकोण मध्ययुगीन ही हैं। चारों नाटकों में उन्होंने पुरुषा पात्रों को उभारना चाहा हैं, लेकिन उनके नारी पात्र ही सहानुभूति प्राप्त कर जाते हैं। अपने नाटकों में पुरुषों की गलतियों का कारण उन्होंने नारियों को माना हैं, यह बात आज के युग में संगत नहीं लगती।

शिल्प की दृष्टि से राकेश के चारों नाटक नवीनतम हैं। उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय और पाश्चात्य नाट्यतत्वों का समन्वय किया हैं। उनके पहले दो नाटकों में भारतीय मंचसज्जा तथा भारतीय नाट्यतत्व अधिक दिखाई देते हैं। लेकिन `आधे अधूरे` तथा `पैर तले की जमीन` पूर्णत: आधुनिक मंचसज्जा तथा आधुनिक नाटकीय तत्वों से युक्त हैं। `आधे - अधूरे` में नगर में रहनेवाले आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार के घर का सेट हैं, जिसमें आधुनिक फर्निचर दिखाई देता हैं। `पैर तले की जमीन` में तो क्लब का सेट हैं। इन दो नाटकों में दृश्य तथा अंक का विभाजन नये ढंग से किया हैं। प्रकाश योजना तथा ध्वनि योजना का प्रयोग ही नाटक में अधिकतर हुआ हैं। संवादों की दृष्टि से उनका प्रत्येक नाटक नवीनता से युक्त हैं। भाषा और क्रिया का एक साथ प्रयोग मोहन राकेश

ने ही अपने नाटकों में पहली बार प्रस्तुत किया है, जो अंतर्द्वन्द्व को अच्छीतरह से प्रकट कर सकता है ।

अपने प्रत्येक नाटक मे उन्होंने कुछ न कुछ प्रयोग किये है । उनके नाटकों की विशेषाता है, कि उनके सभी नाटक सफलतापूर्वक रंगमंचपर खेले जा चुके है । उनके नाटक स्थितियों के नाटक है ।

उनके पहले दो नाटकों में प्रतीकात्मकता अधिक है, तो अगले दो में यथार्थता । पहले दो नाटक ऐतिहासिक कथानक पर आधारित होने के कारण ` आधे-अधूरे ` इतनी समस्याएँ उनमें नहीं मिलती, लेकिन अगले दो नाटक आज की समस्याओं का यथातथ्य चित्रण करते दिखाई देते है ।

उनके चारों नाटकों में एक क्रम है, शृंखला है, तथा सहज विकास है । एक के बाद इसमें आधुनिक बोध बढता गया है । पहले नाटक में भावुकता अधिक थी । अत्यधिक भावुकता ही उलझनों के निर्माण करती है । यह उलझनें ` लहरों के राजहंस ` में हमें दिखाई देती है । उलझने निर्माण होनेपर उसका विश्लेषाण किया जाता है । ` आधे - अधूरे ` में यही विश्लेषाण महेन्द्रनाथ और सावित्री करते है और एक दूसरे को नोचते रहते है । एक दूसरे को जलील करते रहते है । दांपत्य जीवन जब असफल है, तो प्रश्न निर्माण होता है, यह जीवन असफल क्यों हुआ इसका उत्तर ` पैर तले की जमीन ` में उठाया है ।

उनके नाटकों को पढनेपर मन में एक विचार यह आता है, कि राकेश ने अपने चारों नाटकों में मूल्यविघटन से उत्पन्न समस्या, घुटन, कुण्ठा, विसंगतियाँ इसीका चित्रण किया है । उन्होंने जीवन की सिर्फ टूटन को ही दर्शाया है । लेकिन आधुनिक जीवन की स्थिति इतनी दयनीय नहीं लगती, कि इसमें आदर्श छूट गया हो । आज भी हम अनेक व्यक्तियों में विश्वास, आस्था, श्रद्धा, मानवता, अपनापन देखते है । आज भी हम अल्पमात्रा में क्यों न हो ऐसे कई व्यक्तियों को पाते है, जो किसी न किसी विधाय की निष्ठा को निभाकर जीते है और जहाँ

तक हो सके, शाश्वत मूल्यों के बदले वे किसी भी प्रकारके सुख का स्वीकार नहीं करते । मोहन राकेश के जिन नाटकों के आधुनिक बोध का विवेचन किया गया है, उनमें ऐसे आदर्शों का चित्रण न के बराबर है । शायद इसका कारण यह हो, कि नाटककार आधुनिक जीवन की दुरवस्था का ही चित्रण करना चाहते हों । हमारे आधुनिकता संबंधी विवेचन में आधुनिक जीवन की परेशानियों, घुटन, वेदना आदि का परामर्श लिया गया है और स्वयं नाटककार ने उनके उत्तर सूचित नहीं किये है; इसलिए उक्त विवेचन में ऐसी दुरवस्था के लिए उत्तरदायी कारणों तथा उन्हें दूर करने के उपायों की समग्र विवेचना नहीं की गयी है । हमारे अध्ययन की सीमा नाटककार के नाटकों में उपलब्ध आधुनिक बोध ही है ।